प्रातःक्लास 20-5-68 ओमशान्ति शिव बाबायाद है?

ओमशान्ति। मरठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति शिव बाबा बोल रहे हैं। गीता में है श्रीकृष्ण बोले। यहां है शिव बाबा बोले। कृष्ण को बाबा नहीं कह सकते। सभी भारतवासियों को मालूम है पिता दो होते हैं। लौकिक और पारलौकिक। पारलौकिक को परमपिता कहा जाता है। लौकिक को पिता कहा जाता है। पारलौकिक को परमपिता कहा जाता है। उनकोपरमपिता नही कहेंगे। तुमको कोई लौकिक पिता नहीं समझाते हैं। पारलौकिक बाप पारलौकिक बच्चों को समझाते हैं। पहले2 तुम जाते हो शान्तिधाम में। जिसको मुक्ति धाम, निर्वाणधाम वानप्रस्त भी कहते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे जाना है शान्तिधाम। सिर्फ उनको ही कहा जाता है टावर आफ सायलेन्स। यहां बैठे हुये पहले2शान्तिधाम में बैठना हैं। कोई भी सतसंग में पहले2 शान्ति में बैठते हैं। परन्तु उन्हों को शान्तिधाम का ज्ञान नहीं। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं को इस पुराने शरीर को छोड़कर अपने घर शान्तिधाम जाना हैं। कोई भी समय शरीर छूट जाये। इसलिए अभी बाप जो पढ़ाते हैं उन से योग लगाना हैं। सुप्रीम टीचर भी है सदगति दाता गुरु भी हैं। उन से योग लगाना है। यह एक ही तीनों सर्विस करते हैं। ऐसे और कोई एक तीनों सर्विस नहीं कर सकते। यह एक बाप सायलेन्स भी सिखलाते हैं। जीते जी मरने को सायलेन्स कहा जाता हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको अभी घर शान्तिधाम जाना हैं। जब तक पवित्र आत्माएं न बने हैं तब तक कोई वापस जा न सके। जाना तो सभी को है। इसलिए पाप अधर्म कर्मों के पिछाड़ी में सज़ा मिलती है। फिर पद भी भ्रष्ट हो जाते हैं। मानी थोड़ी मोचरा बहुत खाते हैं। क्योंकि माया से हराते हैं। बाप आते ही हैं माया पर जीत पहनाने। परन्तु गफलत से बाप को याद नहीं करते। यहां तो एक बाप को ही याद करना है। भक्तिमार्ग में भी बहुत भटकते हैं। उनको जानते ही नहीं। बाप आकर भटकने से छुड़ाते हैं। समझाया जाता है ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। रात को ही धक्का खाना होता है। भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान। जिससे रात होती हैं। ज्ञान दिन होता है। ज्ञान माना दिन। अर्थात सतयुग त्रेता। भक्ति रात अर्थात द्वापर कलियुग। दिन और रात। दिन को कहा जाता है स्वर्ग। रात को कहा जाता है नर्क। यह है सारी ड्रामा की डेक्युरेशन* का आधा समयदिन आधा समय रात। भक्ति को रात कहा जाता हैं। प्रजापिता ब्रहमा कुमार और कुमारियां* का दिन और रात। यहरात पूरी हो दिन शुरु होता हैं। यह है बेहद की बात। बेहद का बाप बेहद के संगम पर आते हैं। इसलिए कहा जाता है शिवरात्रि। मनुष्य यह नहीं समझते हैं शिवरात्रि किसको कहा जाता हैं। तुम्हारे सिवाय एक भी शिवरात्रि के महत्व को नहीं जानते हैं। क्यों कि यह बीच। जबरात पूरी हो दिन शुरु होता है। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरानी दुनिया और नईदुनिया का बीच। इसको संगम कहा जाता हैं। पुरुषोत्तमसंगम युग। बाप आते हैं पुरुषोत्तम संगम युगे2। ऐसे नहीं कि युगे2 सतयुग त्रेता का संगम उसको भी युग कह देते हैं। बाप कहते हैं यह भूल हैं। शास्त्र वादियों ने झूठ लिखा है। भक्ति के किताबों आद में। उनको वास्तवमें शास्त्र नहीं कह सकते। शास्त्र है ही एक। जैसे बाप एक है, शास्त्र भी एक है सर्व शास्त्र मईसरोमणी गीता। ऊंच ते ऊंच है वह जिसको शिव बाबाकहते हैं। शिव बाबा कहते है मुझे यादकरेंगे तो तुम्हारे पाप नाश होंगे। इसको योग अग्नि कहा जाता हैं। तुम हो सच्चे ब्राहमण। योग सिखल हो पवित्र होना लर। वह ब्राहमण लोग काम चिक्षा पर चढ़ाते हैं। उन ब्राहमणों और तुम ब्राहमणों मेंरात दिन का फर्क है। वह है कुखवंशावली तुम हो मुख वंशावली। हरेक बाप अच्छी रीत समझने की हैं। यूं कोई भी आते हैं तो पहले2 उनको समझाना है बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो। और बेहद के बाप से वर्सा मिल जायेगा। फिर जितना2 दैवी गुण धारण कर करावेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे।

बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। तो तुमको भी यह सर्विस करनी है। पतित तो सभी हैं। पतित दुनिया में पावन एक भी नहीं। पावन दुनिया में पतित एक भी नहीं। गुरु लोग भी हैं पतित। तो वह किस पावन कर न सके। पतित-पावन नाम ही है शिव बाबा का। वह आते भी यहां हैं। जब सभी धर्म पतित बन

जाते हैं। ड्रामा के पलैन अनुसार तब बाप आते हैं। पहले2 तो बच्चों को अल्फ समझाते हैं। मुझे याद करो। तुम कहते हो ना वह पतित पावन हैं। पतित-पावन रूहानी बाप को कहा जाता है। कहते हैं हे भगवान अर्थात हे बाप। परन्तु परिचय किसको भी नहीं हैं। अभी तुम संगमवासियों कोपरिचयमिला है। वह है नर्कवासी। तुम नर्कवासी नहीं हो। हां अगर को हार खाते हैं तो एकदम गिर पड़ते हैं। की कमाई चट हो जाती हैं। मूल बात है ही पतित से पावन होने की। क्रोध को कोई विकार नहीं कहा जाता। बल्कि विकार कहा ही जाता है जोविषय विकार में जाते हैं। यह है ही विषस विषस दुनिया। वह है वायसलेस दुनियां। जहां देवतायें राज्य करते हैं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है पहले2 देवतायें ही सब से जास्ती जन्म लेते हैं। उसमें भी पहले जो सूर्यवंशी है वही पहले2 आते हैं। 2। पीढ़ी तुम वर्सा पाते हो। कितनाबेहद का वर्सा हैं। पवित्रता सुख शान्ति का। सतयुग को पूरा सुखधाम कहा जाता हैं। त्रेता है सेमी। क्योंकि दो कला कम हो जाती हैं। कला कम होने से रोशनी कम हो जाती हैं। चन्द्रमा की भी कला कम होने सेरोशनी कम हो जाती हैं। आखरीन बाकी जाकर लीक रहती है। नील नहीं होती। तुम्हारे में भी ऐसे हैं। नील नहीं होता। आटे में लूण रहता हैं। आटे में लूंण इसको कहा जाता हैं। तो बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। यह है आत्माओं और परमात्मा का मेला। यह बुद्धि से काम लिया जाता हैं। परमात्मा कब आते हैं मेले में। जब बहुत आत्मायें अथवा बहुत मनुष्य होते हैं। आत्माओं का परमात्मा का मेला किसलिए लगता है, वहमेले तो मेले होने की है। हरेक मेले मेंवेश्यालय भी होता हैं। मनुष्य डर्टी बन जाते हैं। विषस जो होते हैं उनको जंगली जनावर कांटे कहा जाता हैं। इस समय तुम बागवान से कांटे से फूल बन रहे हो। कैसे बनते हैं? योग अथवा याद की बल से। बाप को कहा जाता है सर्वशक्तिवान। जैसे बाप सर्वशक्तिवान है वैसे 5विकार स्वी रावण भी कम शक्तिवान नहीं। बाप खुदकहते हैंमाया बड़ी बलवान है। दुस्तर है। कहते हैं बाबा हम आप को याद करते हैं: माया हमारी याद को भूला देती हैं। एक दो के दुश्मन हुये ना। बाप आकर माया पर जीत पहनाते हैं। माया फिर हरा देती हैं। देवताओं और असुरों की युध दिखाई है। परन्तु ऐसे कोई है नहीं। युध तो यह है। तुम बनते हो देवता बाप को याद करने से। माया याद में बिघ्न डालती हैं। पढ़ाई में बिघ्न नहीं डालती। याद में बिघ्न पड़ती है। घड़ी2 माया भूला देती हैं। देह अभिमानी बनने से माया का थप्पर लगता है। कामी जो होते हैंउनके लिएबहुतकड़े अक्षर कहे जाते हैं। कहते हैं ना तुम तो जैसे कामी कुत्ते हो। बेहद का बाप भी समझाते हैंहम तुमको जी0ओ0डी0 बनाते हैंरावण तुमको डीओ जी बनाती है। यह है ही रावण राज्य। यह है ही रावण [illegible]। मिशाल देते हैं ना कुत्ते का पूंछ कितना भी सीधा करो परन्तु होगा हो नहीं। यहां भी समझाया जाता है पावन बनो फिर भी बनते नहीं। बाप कहते हैं बच्चों विकार में नहीं जाओ। अर्थात कुतरी मत बनो। बन्दर मत बनो। काला मुंह मत करो। फिर भी लिखते हैंबाबा माया से हार खाली कालामुंह कर बैठे। अज्ञान काल में भी कोई गंदा काम करते हैं तो कहते हैं मुआ काला मुंह कर के आये हो। गोरा और सांवरा है ना। विकारी काले-निर्विकारी गोरे होते हैं। श्याम सुन्दर का अर्थ भी सिवाय तुम्हारेदुनिया में कोई भी नहीं जानते। कृष्ण को भी श्याम सुन्दर कहते हैं। बापउनके नाम का ही अर्थ समझाते हैं। स्वर्ग का फर्स्ट प्रिन्स था। सुन्दरता में नम्बरवन पास यह होता हैं। फिर पुनर्जन्म लेते2नीचे उतरते काला बन जाते हैं। तो नाम रखा है श्याम सुन्दर। यह अर्थ भी बाप समझाते हैं। शिव बाबा तो स्वर सुन्दर है ही। वह आकर तुम बच्चों को सुन्दर बनाते हैं। पतित काले, पावन सुन्दर होते हैं। नेचरल ब्युटी रहती है। आत्मा को सतोप्रधान बनने से शरीर भी सतोप्रधान बन जाती हैं। तुम बच्चे आये हो कि हम स्वर्ग का मालिक बनें। इसलिए गायन भी है शिव भगवानुवाच: मातायें स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। और फिर शंकराचार्युवाच मातायें नर्क का द्वार खोलती हैं। तुम ब्रहामणियां बन सभी को स्वर्ग का द्वार दिखाती हो। समझाते हो इसलिए वन्देमात्रम कहा जाता हैं। वन्देमात्रम तो पिता भी अन्डर स्टुड है। बाप मातओं

की महिमा को बढ़ाते हैं। पहले ल० पीछे ना०। इहां फिर पहले मिस्टर पीछे मिसेज़। ड्रामा काराज़ ऐसा बना हुआ है। बाप रचयिता पहले अपना परिचय देते हैं फिर रचना के आदि मध्य अन्त काराज़ भी समझाते हैं। तुमको समझाया है दो बाप होते हैं। एक होता है हद का लौकिक बाप। दूसरा है बेहद का पारलौकिक बाप। हद के बाप के होते हुये पारलौकिक बेहद के बाप को याद करते हैं। क्योंकि उन से बेहद का वर्सा मिलता है। हद के वर्सा मिलते हुये भी बेहद काप को याद करते हैं। बाबा आप आवेंगे तो हम और संग तोड़ एक बाप से ही जोड़ेंगे। यह किसने कहा? आत्मा ने। आत्मा ही पतित बनती है शरीर द्वारा। आत्मा ही इनआरगन्स द्वारा पार्ट बजाती हैं। आत्मा ही बैरीस्टर बनता हैशरीर द्वारा। दूसरे जन्म पता तो नहीं रहता है। कोई क्या बन जावेंगे कोई क्या बन जावेंगे। हरेक आत्मा जैसे2 कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। शाहुकार गरीब बनते हैं, कर्म है ना। यह (ल०ना०) विश्व के मालिक थे। इन्हों ने क्या किया यहतुम जानते हो और तुम ही समझा सकते हो। शुद्र सम्प्रदाय कोई नहीं जानते। वह तो दुर्गति को पाये हुये हैं। भक्ति मार्ग है हो दुर्गा= दुर्गा। शोभनीक है ना गुण्य के पानीमिशल। वह है ही गिरने का पतित बनने कामार्ग। कथाएं वार्ताएं कितने हैं। बाप कहते हैं इन आंखों से तुम जो कुछ देखते होउन से वैराग्य। यह तो सभी खत्म हो जाना है। नया मकान बनाते हैं तो फिर पुराने से वैराग्य हो जाता है। बच्चे कहेंगे बाबा ने नया मकान बनाया है हम उस में जावेंगे। यहपुराना तो टूट-फूट जावेंगे। यह है बेहद की बात। बच्चे जानते हैं बाप आया हुआ है स्वर्ग की स्थापना करने ब्रहमा द्वारा। यहपुरानी दुनिया है छी छी कोसखाना। घर घर में कोसखाना है। वहां तो कोसखानो हिंसा की बात ही नहीं। वह है अहिंसा देवी देवता परमोधर्म। बाप आते ही हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। चित्र भी बना हुआ है ब्रहमा द्वारा स्थापना.... चित्र भी त्रिमूर्ति का बनाया है। इसमें ब्रहमा विष्णु शंकर दिखाते हैं। परन्तु उन्हों द्वारा यहकौन कराते हैं उस बाप का चित्र है नहीं। यही भूल कर दी है। गवर्नमेन्ट ने जो कोट आफ आर्मस बनाया है उसमें फिर शेर दिखाये हैं। क्यों कि यह जंगली जनावर हैं ना। अर्थकुछ भी समझते नहीं। नीचे में लिख दिया है सत्यमेव जयते। त्रिमूर्ति शिव के आगे तुम बैठे हो। वास्तवमें यह कोट आफ आर्मस है तुम ब्राहमणों का। तुम ब्राहमणों का यह कुल सब से ऊंच है। छोटी है ना। यहराजाई स्थापन हो रही हैं। इसकोट आफ आर्मस को तुम ब्राहमण ही असल जानते हो। शिव बाबाहमकोब्रहमाद्वारा पढ़ाते हैं। देवी देवता बनाने लिए। शंकर द्वारा विनाश। बाप ने समझाया है विनाश तो होना ही हैं। दुनिया तमोप्रधान बनती है तो नेचरल कैलेमिटिज़ भी मदद करते हैं। बुधि से कितनी सांयस निकालते हैं। पेट से कोई कुसल नहीं निकली है यह सांयस निकलती है। जिससे सारी कुल खत्म हो जावेगा।

बच्चों को समझाया है ऊंच ते ऊंच है शिव बाबा। पूजा भी करनी चाहिए एक शिव बाबा की और फिर देवताओं को। तुम ब्राहमणों की पूजा हो नहीं सकती। क्योंकि तुम्हारी भल आत्मा पवित्र है, परन्तु शरीर तोपवित्र नहीं हैं। इसलिए पूजन लायक हो नहीं सकते। महिमालायक है। जब फिर तुम देवता बनते हो तो फिर आत्माभी पवित्र, शरीर भीनया पिवत्र मिलता है। इस समय तो महिमालायक हो। बन्देमातरम गाया जाता हैं। मातातओं को कन्या=कन्व ने क्या किया। माताओं ने ही श्रीमतपर ज्ञान दिया है। माताएं सभी को ज्ञान अमृत पिलाती है। यर्थात रीति तुम बच्चे ही समझ सकहते हो। शास्त्रों में बहुत तिक2लगी हुई है। वह बैठकर के पढ़ करसुनाते हैं। तुम सत सत करते रहते हो। तुम भी बैठ कर पढ़कर सुनाओ। तो सत सत कहेंगे। अभीतुम सत सत नहीं कहेंगे। मनुष्य तो बिलकुल ही पत्थर बुधि हैं। अर्थात बुधि मारी हुई हैं। गायन भी हैपतीर बुधि और पारस बुधि। पारस बुधि मना पारस नाथ। नेपाल में भी बच्चा गया था तो वहां उन्हों ने कहा पारस नाथ का चित्र इन चित्रों में क्यों नहीं दिखाया है। परन्तु पारस बुधि का चित्र तो पहले2 हैं। पारस पुरी का नाथ ल०ना० हैं ना। इन्हों की डिनायस्टी है ना। पारस नाथ ल०ना० बिगर और कौन है? कोई भीजवाब दे सकेंगे। परन्तु समझाने वाला चाहिए। ऐसे तो तुमको बहुत कहते हैफ्लाने का चित्र नहीं डाला है। अभी

मूल बात है रचयिताऔर रचना को जानना। जिसके लिए ऋषि-मुनि भी नेती3 करते गये। अर्थात वह भी नहीं जानते। हम नहीं जानते अर्थात नास्तिक हैं। बाप रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते तो नास्तिक ठहरे ना। नास्तिक गुरु क्या बतावेंगे। सभी हो जाते हैं नास्तिक। तो जरूर आस्तिक भी कहीं होंगे ना। बाप है आस्तिक। वह कब नास्तिक बनते ही नहीं। तुम आस्तिक बनते हो फिर नास्तिक भी बनते हो। क्योंकि बाप को भूल जाते हो। पहले तुम भी रचयिता और रचना को नहीं जानते थे अर्थात नास्तिक थे। अभी बाप ने अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय दिया है। तो तुम आस्तिक बने हो। यह है आस्तिक वह है नास्तिक। माया नास्तिक बनाती है जिसको ही रावण कहते हैं। रावण है सभी का नम्बरवन दुश्मन। यहकिसको भी पता नहीं है कि रावण कब आते हैं। न शिव के जयन्ति का मालूम है न रावण का जन्म का मालूम होता है। बाप बैठ समझाते हैं द्वापर से रावण का जन्म होता है। द्वापर शुरू होते हैं तोरावण आते हैं। यह संगम युग की शुरूआत होती है। जब कि बाप आते हैं। फिर द्वापर में देवतायें वाममार्ग में जाते हैं। तो रावण राज्य शुरू होता हैं। उनकी निशानी भी है। तुम जगन्नाथ पुरी में जाओ वहां चित्र भी काला दिखाते हैं। ऊपरमें देवताओं को दिखाते हैं। ड्रेस वही और विकारी चित्र दिखाई है। परन्तु यह भी किसको पता नहीं। बाप आकर समझाते हैं। बहुत गन्दे चित्र दिखाये हैं। जो देवतायें सुन्दर थे वही फिर श्याम बनते हैं। तो मंदिर में फिर काला चित्र बना देते हैं। नाम तो बहुत ही रख देते हैं। तो बाप बैठ तुमको रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। संगम युग पर ही बाप आकर रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। कर्म अकर्म विकर्म की गति समझाते हैं। रावण राज्य में विकर्म बन जाते हैं। सतयुग में रावण राज्य ही नहीं तो कर्म अकर्म हो जाते हैं। यहबातें कोई साधु सन्त बता न सके। कल्प2 बाप ही आकर समझाते हैं। क्योंकि तुम भूल जाते हो। लाखों वर्ष की बात तो याद भी कर नहीं सकते। बापसमझाते हैं यह ड्रामा है ही 5000वर्ष का। तुम ड्रामा के एक्टर्स हो। तुमको हमने कितना शाहुकार विश्व का मालिक बनाया जो तुम से कोई छीन न सके। अभी क्या हालत हो गई है। घर2 मेंकितने लड़ाई झगड़े आद हैं। अनाज़ के लिए, पानी के लिए लड़ते रहते। तुम अनाज़ नहीं देते तो हम तेल नहींदेंगे। सभी तरफ से झगड़ा ही झगड़ा है। उनको मिटानें वाला है बाप। सभी चाहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम कहते हो हम तो वह स्थापन कर रहे हैं। भला विश्व में शांति कब थी। कैसे थी वह बताओ। कुछ भी नहीं जानते। सिर्फ कहते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। वह तो होती हैं शान्तिधाम में। जहां आत्मायें रहती हैं। वहां है ही शान्ति। यह जानते नहीं हैं कि विश्व में शान्ति थी? 5000वर्ष की बात है। तुम बतलाते हो तो कहते हैं यह छोटी बच्चियां क्या बतलावेंगी। अरे लिखा हुआ है चिड़ियाओं ने सागर को हप किया। तुम बच्चियां ही सारे विश्व के मालिक बनते हो। पहले तुम्हारे में क्या अकल था। कुछ भी नहीं। बिल्कुल जनावर थे। बाप कहते हैं इन्हों को छोटी मत समझो। यह माताएं ही स्वर्ग के गेट खोलती हैं। तब ही बाप कहते हैं म्युज़ियम वा प्रदर्शनी में लिखोस्प्रीचुअल म्युज़ियम। गेट वे टु हैविन। मनुष्य मनुष्य को गति सदगति दे न सके। कलियुग में कोई भी पवित्रआत्मा रह न सके। सतयुग फिर अपवित्र आत्मा रह न सके। यहसालोगन भी हो। ऐसे भी कहते हैं हमारा गुरु तो ऐसा है। बोलो भगवान कहते हैं जो अपन को ईश्वर कहलाते हैं वह हिरण्यकशिपुजैसे बड़े ते बड़े दैत्य हैं। गीता में लिखा हुआ तो सभी कुछ है। गीता किसने सुनाई? शिवाचार्य। बाप सम्मुख सुनाते हैं। उनको व्यास भी कहते हैं। कथा सुनाने वाले को व्यास कहते हैं। तुमको तो बाप सुनाते हैं। बाद में फिर मनुष्यों ने बैठ दन्त कथा लिखी है वास्तव में शास्त्र भी सिर्फ एक हैं। किसका? भगवान का। गाड इज वन। ज्ञान भी एक है। शास्त्र भी एक है। बाकी तो अनेक धर्मों के अनेक शास्त्र हैं। परन्तु उन से किसकी की सदगति नहीं होती है। गीता पढ़ते 2 नीचे ही उतरते आये हैं। क्योंकि उन में भी झूठ है। इसलिए गायन भी है झूठी माया ··· सम्पत्ति को झूठ नहीं कहा जाता। माया अर्थात 5विकार। यह बातें भी हैं झूठी माया ··· झूठासब संसार। अच्छा बच्चों कोगुडमार्निंग